I LOVE
INDIA
परमेश्वर
प्रेम है
मेरा भारत
महान

संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा । भजन संहिता 50:15

आपको बचाने, परमेश्वर ने जो नाव भेजा है, उसे इन्कार करने से आप कैसे बच सकेंगे?

परमेश्वर के दिये हुए मौकाएँ को खोयें तो अन्य मौकाएँ कैसे पाएंगे ?

परमेश्वर प्रेम है

परमेश्वर के प्रिय मित्र। परमेश्वर प्रेम है। (1यूहन्ना 4:8) वे हमसे प्यार करते हैं । हम प्रार्थना करते हैं कि ''मृत्योर्मा अमृतं गमय'' जिसका अर्थ है मृत्यु से हमें अनंत जीवन दे।

अतः इस छोटी पुस्तक में परमेश्वर, शैतान, पाप, मानव, मानव का पतन, परमेश्वर की खोज में मानव का प्रयास, उसका परिणाम, परमेश्वर ने मनुष्य को समेटना, मृत्यु, मृत्य के बाद जीवन, मृत्यु से अनंत जीवन का मार्ग, पवित्र बाईबल के द्वारा परमेश्वर का अभिव्यक्त किया गया सत्य आपके लिए प्यार और सच्चाई से चित्र सहित स्पष्ट की गई है।

प्रभु से प्रेरित अनेक विश्वासियों के प्रेम, त्याग तथा उनके सहयोग से यह छोटी पुस्तक आप के पास पहूँच रही है।

कृपया इसे पढ़िये...

मृत्यु में से अनंतजीवन पाये, प्रभु आपको आशिष दें।

" आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है । " यशायाह 66:1

जो महान् और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है,
'' मैं ऊँचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूँ । '' यशायाह 57:15

सृष्टिकर्ता (सृजनहार,परमेश्वर) और सृष्टि

जो परमधन्य और एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है, और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है। उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन (वैसा ही हो)।
I तीमुथियुस 6:15-16.

परमेश्वर ने (स्वयं को) अपने मे तीन व्यक्तित्वों को प्रगट किया है।

1. पिता : परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा । यूहन्ना 1:18 *स्वर्गीय पिता... मत्ती 6:9*

2. पुत्र : एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया । *यूहन्ना 1:18 ,*
(यीशु मसीह जो देहधारी होकर आया था।)

3. पवित्र आत्मा : जैसे हवा अदृश्य में काम करती है, वैसे ही पवित्र आत्मा हमें घेर कर पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय के बारे में यकीन दिलाते हुए अपनी इच्छा से जो भी उनको स्वीकार करते हैं उनमें बसते हुए तथा दिलासा देते हुए मसीह के रूप में लाकर मसीह के दूसरा आगमन के लिए तैयार करेगा ।

त्रिएकता केलिए उदाहरण :-

(अ) परमेश्वर में प्रेम है, अतः प्रेम को प्रेम करनेवाले एवं प्रेम पानेवाले रहते है।

(आ) परिवार में कई सदस्य होता हैं फिरभी परिवार (एक वचन) कहा जाता हैं।

(इ)परमाणु में एलक्ट्रानों, प्रोटानों और न्यूट्रानों संगटित रहते है फिरभी परमाणु (एक वचन) कहा जाता है।

चोर केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है । यूहन्ना 10:10

परमेश्वर के विरोधी - शैतान

परमेश्वर के सम्मुख से लूसीफर (शैतान) गिराया गया । (यशायाह 14:15)

तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए । 1 पतरस 5:8

शैतान (परमेश्वर के विरोधी) और पाप

मानव से पहले सृष्टि किये गये स्वर्गदूत परमेश्वर की आराधना कर रहे थे, प्रधान दूत लूसीफर अपनी स्वतंत्रता का गलत इस्तेमाल (दुरूपयोग-पाप) करके परमेश्वर की महिमा और सिंहासन चाहने के कारण परमेश्वर के सम्मुख से गिराया गया (शैतान) ।

''हे भोर के चमकनेवाले तारे, तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था, मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा, मैं मेघों से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा। परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा जाएगा । जो तुझे देखेंगे तुझ को ताकते हुए तेरे विषय में सोच सोचकर कहेंगे, क्या यह वही पुरुष है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था और राज्य में घबराहट डाल देता था; जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरों को ढा देता था, और अपने बंदियों को घर जाने नहीं देता था? *यशायाह 14:12-17*

तू छानेवाला अभिषिक्त करूब था, मैंने तुझे ऐसा ठहराया... तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया; इसी से मैं ने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा... नष्ट किया है। यहेजकेल 28:14-16

पाप : • शौतान ने परमेश्वर के द्वारा दिया गयी स्वतंत्रता (स्वेछ्छा) को दुरूपयोग किया ।

• दैविक आज्ञा का अतिक्रमण

हे यहोवा, तेरे काम अनगिनित हैं । इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है ।
पृथ्वी तेरी सम्पत्ती से परिपूर्ण है । भजन संहिता 104:24

पाप करने से पहले मृत्युरहित महिमा की शरीर में अदन की वाटिका में आनन्दित आदम और हव्वा ।

जीवन के कर्त्ता परमेश्वर के संबंध में – मृत्युरहित मानव।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार (अर्थात् आत्मास्वरूप, मृत्युरहित, जीवित, प्रेम, दया, तरस, अनुग्रह, रचनात्मकता ... इत्यादि गुणों से) उत्पन्न किया... नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की । उत्पत्ति 1:27

परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। उत्पत्ति 1:31

परमेश्वर ने अपनी वाणी से छठवे दिन में सारी सृष्टि की छठवा दिन भूमी की मिट्टी से नर (आदम) को रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया, और नर जीवित प्राणी बन गया। जीवन के कर्त्ता के द्वारा जीवन पाते हुए मानव मृत्युरहित जीवन बिताते थे। (उत्पत्ति 2)

जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई । रोमियों 5:12

पाप तो दैविक आज्ञा का अतिक्रमण (व्यवस्था का विरोध) है । 1 यूहान्ना 3:4

मानव का पतन (मृत्यु)

यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि " तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष (पाप के चेतावनी का वृक्ष) है, उसका फल तू कभी न खाना क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा । " उत्पत्ति 2:16,17

यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था; उसने स्त्री से कहा, क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? स्त्री ने सर्प से कहा, इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे। तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे । अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया । तब उन दोनों की आँखें खुल गई, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। उत्पत्ति 3:1-7

मानव परमेश्वर से अलग होकर शारीरिक मृत्यु और आत्मिक मृत्यु (परमेश्वर से दूर होना) को पाया।

परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया । रोमियों 1:21

अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला । रोमियों 1:23

सृजनहार को छोड़ कर सृष्टि की उपासना करना ।

उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की। रोमियों 1:25

परमेश्वर से दूर हुआ मानव फिर से परमेश्वर को खोजना (असफल कोशिश)

सृजनहार को छोड़कर सृष्टि की उपासना करते हुए मानव ने परमेश्वर को भिन्न-भिन्न रूपों की कल्पना करके, जो कुछ वह देखा, उसे परमेश्वर समझकर भ्रम में पडा। फल स्वरूप दिन ब दिन पतन होते हुए बगैर पाप से मुक्ति या छुटकारा के बिना, निराशा, उदास होकर, अशांति और बिमारियों का शिकार बना ।

नास्तिक के बारे मे : उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं । इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया। रोमियों 1:20, 21

तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। निर्गमन 20:4

परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपये या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों । प्रेरितों 17:29

मूर्ख ने अपने मन में कहा है, " कोई परमेश्वर है ही नहीं । " वे बिगड़ गए, उन्होंने घिनौने काम किए हैं । भजन संहिता 14:1 ; 53:1

सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं । रोमियों 3:23

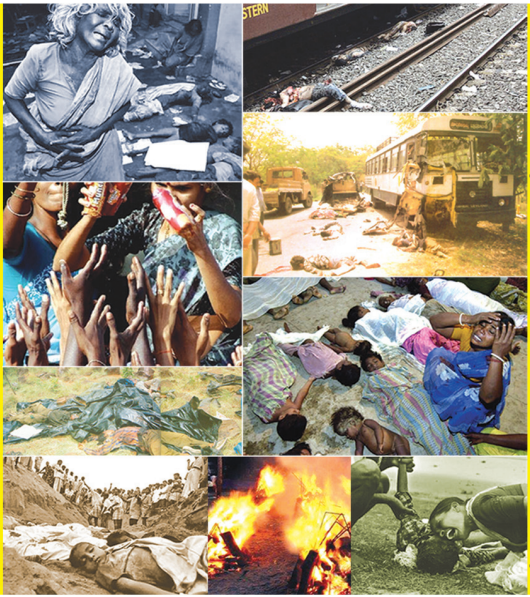

तुम क्यों मरो ?
जो मेरे, उसके मरने से मैं
प्रसन्न नहीं होता हूँ ।
यहेजकेल 18:31,32

⇦ इस के लिए हम किसे दोषी मानते हैं ।

क्या यह हमारे पापों का प्रतिफल नहीं ?

क्या परमेश्वर ने हमें पहले चेतावनी नहीं दी थी ? (उत्पत्ती 2:16,17)

अभी भी सुनो, उपवास के साथ
रोते-पीटते अपने पूरे मन से
फिरकर मेरे पास आओ ।
योएल 1:12

⇦ क्या हम इस के लिए जिम्मेदार नहीं हैं ?

कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। रोमियों 3:11

पाप, पापों और प्रतिफल

1. **पाप (जन्म पाप):** जन्म से पाया हुआ पाप / आदम के द्वारा अनुवंशिक (विरसत, संक्रमित) पाप।

2. **पापों (कर्म पाप):** a. परमेश्वर है ही नहीं कहना । b. सृष्टिकर्ता को छोड कर सृष्टि की आराधना करना। (जैसे ''पति'' शब्द अनोखा है । हम अपने इच्छानुसार सभी के लिए यह शब्द उपयोग नही कर सकते है । वैसे ही ''भगवान'' (परमेश्वर) शब्द हम अपनी इच्छानुसार सभी के लिए उपयोग न कर सकते है ।)

''पुत्र पिता का, और दास स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूँ, तो मेरा आदर कहाँ है ?''मलाकी 1:6

c. जो कुछ नही करना चाहिए उन्हें जानबूझकर करना । पाप तो व्यवस्था का विरोध है । (कानून को तोड़ना) 1 यूहन्ना 3:4

d. जो कुछ करना चाहिए उन्हें नहीं करना । जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता उस के लिए यह पाप है । याकूब 4:17

3. **प्रतिफल : पाप की मजदूरी तो मृत्यु है ।** रोमियों 6:23

इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया... जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, तो परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करें । इसलिये वे सब प्रकार के अधर्म और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, दूसरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मायारहित और निर्दय हो गए। रोमियों 1:26, 28-31.

मानव अपने कोशिशों से परमेश्वर को जाने बिना परमेश्वर के नियमों को पालन करने में असफल रहा। बिना शान्ति, बिना मेल और बिना पाप क्षमा, वे पाप की स्मृति में रहते हुए अपराध के भाव में, दोष सचेतन सहित, मृत्यु के डर से भरे हुए हैं ।

जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। गलातियों 4:4

परमेश्वर से दूर हुआ मानव को ढूँढ कर उद्धार
करने के लिए परमेश्वर खुद ही दुनिया में जन्म लिया ।

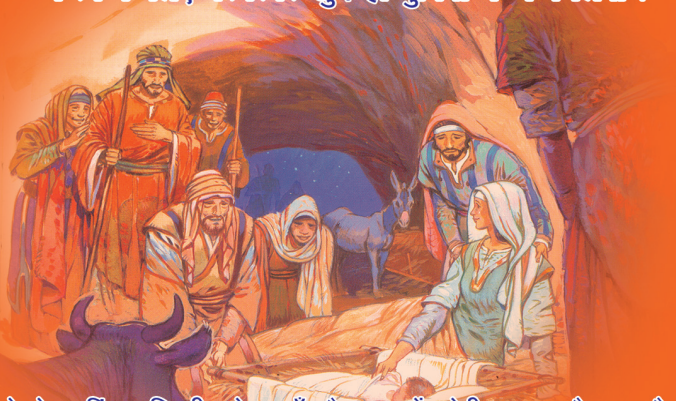

दुनिया के केन्द्र बिंदु पालिस्तीन देश, गाँव बैतलहम में, रोमी साम्राट औगुस्तुस कैसर के
कार्यकाल में कुँवारी मरियम के गर्भ में पवित्र आत्मा के द्वारा चरनी में प्रभु यीशु मसीह का जन्म ।

मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया । 1तीमु.1:15

जब मानवीय प्रयास विफल रहे हैं तब मानव की खोज में परमेश्वर।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए । यूहन्ना 3:16

परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया । यूहन्ना 1:18

पुत्र को चूमो, ऐसा न हो कि वह क्रोध करे । भजन संहिता 2:12

जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है । यूहन्ना 3:36

भक्त दाऊद जैसे वे परमेश्वर में दो व्यक्तियों को देखते हुए लिखा है कि

मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, " तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ । " भजन संहिता 110:1

प्रभु के बारे में पिता की गवाही : जब यीशु बपतिस्मा लिए । यह आकाशवाणी हुई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ । मत्ती 3:16, 17

प्रभु यीशु मसीह के द्वारा किया हुआ कुछ आश्चर्यकार्य (चमत्कार)

इतने बड़े चमत्कारों को करने वाला परमेश्वर, क्या आपके जीवन में नहीं कर सकते है ?

5 रोटी और 2 मछलियों से
पाँच हजार पुरूषों को खिलाना

पानी को दाखरस में बदलना

पानी पर चलना

मरा हुआ लाजर को 4 दिन
के बाद जिलाना

सागर और आंधी को शांत करना

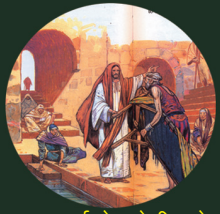

38 वर्ष के रोगी को
चंगा करना

(यीशु के) कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ । यशायाह 53:5

प्रभु यीशु मसीह की 7 विशेषताएँ

1. जन्म : हजारों से अधिक भविष्यवाणियों की पूर्ति

उदाहरण : एक कुँवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। यशायाह 7:14 (ईसा पूर्व 750) पुरूष की भागीदारी के बिना पवित्र आत्मा के द्वारा कुँवारी मरियम को पैदा हुआ । (लूका 1:35) (पवित्र - बिना जन्मपाप)

2. पवित्र जीवन : प्रभु यीशु ने कहा (सवाल किया) तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है ? यूहन्ना 8:46 (पवित्र, बिना कर्मपाप)

3. अनोखा आश्चर्यकार्य : चमत्कार करना जो कोई और नहीं कर सकता। बगल का तस्वीर देखें...

4. अनोखा उपदेश : जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका । मत्ती 5:28

जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे । मत्ती 5:39

तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? मत्ती 7:3

तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख । तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख । मत्ती 22:37,39

जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे "अरे मूर्ख" वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा । मत्ती 5:22

अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो । मत्ती 5:44

अपने सतानेवालों को अशीष दी; आशीष दो स्त्राप न दो । रोमियों 12:14

प्रभु यीशु मसीह पापियों को क्षमा कर के उन्हे परिवर्तन करना

पापिनी स्त्री को उद्धार करना

पथराव किये जानेवाली स्त्री को क्षमा करके उद्धार करना

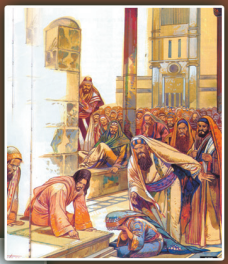

जक्कई को उद्धार करना

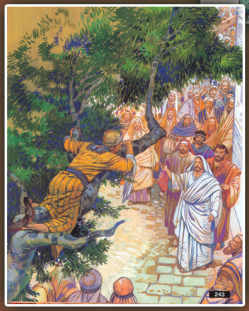

सामरी स्त्री को उद्धार करना

ऐसा कोई पाप है जो मसीह प्रभु क्षमा नही कर सकता ? आप के हर एक पाप को क्षमा करके आपको भी परिवर्तन कर सकता है ।

5. जिनको कोई उद्धार नहीं कर सकते उनको उद्धार किया ।

पापिनी स्त्री - लूका 7
पत्थराव के लिए लाया गया स्त्री - यूहन्ना 8
पाँच पति कर चुकी स्त्री - यूहन्ना 4
धन के लालच मे परमेश्वर तथा समाज से दूर हुआ मनुष्य जक्कई - लूका 19
सूली पर चढ़ाया गया चोर - मत्ती 27
मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया । 1 तिमुथियुस 1:15
पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है । - रोमियों 6:23
मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूँगा। मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों का मानकर उनके अनुसार करोगे। यहेजकेल 36:26,27
जब परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। रोमियो 8:9
'' प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। '' प्रेरितों 16:31
जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह **मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है ।** यूहन्ना 5:24
क्या ऐसा महान उद्धारकर्ता के कोई बराबर है? तुम्हारा जन्म एवं कर्मपापों को मानकर प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लो । प्रभु यीशु आपके जीवन को बदल सकते हैं ।

आपके पापों के लिए कौन मरा ?

तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं ? इब्रानियों 2:3

6. मसीह प्रभु की मृत्यु – मानव के पाप का प्रायश्चित

प्रभु यीशु मसीह अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की - अपनी इच्छा से अपनी जान दी ।

मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ । कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर ले लेने का भी अधिकार है।

यूहन्ना 10:17, 18

यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है । । यूहन्ना 1:7

यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। मत्ती 26:28

यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया । । कुरन्थियों 15:3

पाप की मजदूरी मृत्यु को प्रभु सहकर हमारे पाप के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर अपना प्राण त्याग करके अनंत मृत्यु तथा अनंत नाश से बचाकर अनंत जीवन (हमेशा मृत्युरहित) हमें प्रदान कर रहा है।

क्या आपके पापों की क्षमा हुई? आप निश्चित हैं कि यदि आप इस क्षण में मर जाते हैं, तो आप परमेश्वर के साथ रहेंगें?

प्रभु यीशु मसीह मरा और दफनाया गया है। सरकारी और विरोधी दल कब्र को सुरक्षित करके मोहर डालके पहरा रखे थे। फिर भी प्रभु यीशु मृत्यु को जीत कर जयवन्त हुआ ।

मृत्यु पर विजय - मसीह प्रभु का पुनरुत्थान (मृत्यु से जी उठना)

खाली कब्र

मरियम **मगदलीनी** को दर्शन देना

बन्द कमरे मे 10 चेलों को दर्शन देना

शक से भरा हुआ चेला थोमा को दर्शन देना

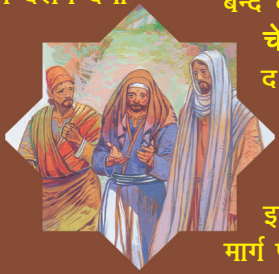

इम्माउस के मार्ग पर दर्शन देना

क्या ऐसा कुछ भी है जो मृत्यु –विजेता प्रभु के लिए असंभव है?

7. विजयी प्रभु यीशु मसीह मृत्यु से जीतकर जी उठा ।

तीसरा दिन प्रभु मृत्यु को जीतकर मृत्युरहित महिमा देह से जी उठा (पुनरुत्थान हुआ)

40 दिन अलग अलग समय में चेलों को, 75 लोगों को,

500 लोगों को एक साथ, दर्शन दिया।

40 दिन के बाद महिमायुक्त प्रभु स्वर्गारोहण हुआ ।

उन के (यीशु के) देखते देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया । उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष (स्वर्गदूत) श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए । और उनसे कहा, हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा । प्रेरितों 1:9-11

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा । प्रेरितों 16:31

यीशु को...तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला । परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया; कयोंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता । प्रेरितों 2:24

40 दिनों के बाद मसीह प्रभु का स्वर्गारोहण

यीशु मसीह
हमारे पापों के लिए मर
गया, और गाड़ा गया,
और पवित्र शास्त्र के
अनुसार तीसरे
दिन जी भी उठा।
1 कुरिन्थियों 15:3,4

अब हमारे
उद्धारकर्ता मसीह
यीशु के प्रगट होने
के द्वारा प्रकाशित हुआ,
जिसने मृत्यु का नाश किया
और जीवन भर अमरता को
उस सुसामाचार के द्वारा
प्रकाशमान कर दिया।
2 तीमुथियुस 1:10

सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिए चेलों को आज्ञा दिया ।

प्रभु यीशु का स्वर्गारोहण, विश्वासियों के लिए महान आज्ञा

यीशु ने उनके पास आकर कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।'' मत्ती 28:18-20

यीशु ने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा; विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।'' मरकुस 16:15-18

सुसमाचार का अर्थ : मनुष्य अपने पापों के कारण नरक में जाने का जरूरत नहीं है। क्यों कि यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा स्वर्ग में जाने के लिए एक मार्ग मनुष्यों के लिए तैयार किया हुवा है। यीशु ने उससे कहा, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ ; यूहन्ना 14:6

मृत्यु मानव के लिए अन्त नहीं है परन्तु आरंभ है।

स्वर्ग राज्य (मुत्यु के बाद विश्वासी का उम्मीद)

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं"। प्रकाशितवाक्य 21:1,3,4

वे उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की अवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे। प्रकाशितवाक्य 22:4, 5

उसमें कोई अपवित्र वस्तु, या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।
प्रकाशितवाक्य 21:27

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो। यूहन्ना 14:2, 3

उस स्थिर नींववाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है। इब्रानियों 11:10

परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8) वह नहीं चाहता कि तुम नरक में जाना

आनंद, क्लेश, दुःख, मृत्यु, नरक सबी वास्तविक हैं । कल्पना नहीं हैं ।

मृत्यु और नरक

नरक मनुष्यों के लिए नहीं बनाया गया ।
(हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। मत्ती 25:41) परन्तु मानव ने परमेश्वर के उद्धार योजना को इनकार करके उद्धारक को ठुकराकर मानव अपनी मर्जी खुद ही चुनकर नरक जा रहा है ।
मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है । इब्रानियों 9:27
डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है । प्रकाशितवाक्य 21:8
जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया । प्रकाशितवाक्य 20:15
पत्थर के नीचे अंधेरे की आदत में रहनेवाले कीडें रोशनी को नहीं झेल सकते हैं । पत्थर निकालने के बाद फिर अंधेरे में चले जाते है। उसी तरह जो पाप की अंधकार में आदत डाला हुआ, और पापों की माफी इनकार करने वाला, स्वर्गीय रोशनी मे खड़ा नही होकर नरक चुनता है।
हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा (नरक के क्लेश को आप नही सह सकते हो।) नीतिवचन 23:26

प्रार्थना

प्यारे भाइयों और बहनों ।

इस पुस्तक के सभी विषय पढ़ने के बाद आप ने पापों का फल मृत्यु से अनंत जीवन पाने के लिए ऐसा प्रार्थना किजिए कि - हमें अत्यंत प्यार करनेवाले हमारे स्वर्गीय पिता मैं धन्यवाद करता हूँ कि आपने अपना प्रिय पुत्र मसीह प्रभु को मेरे लिए कलवरी के क्रूस पर चढ़ाया। मैं धन्यवाद करता हूँ कि आप ने मेरे असीम पापों के लिए प्रायश्चित किया। पवित्र परमेश्वर, मैं पापी हूँ और आप से दूर हूआ। अब सत्य जानकर मेरे पापों को कबूल कर रहा हूँ। कृपया मुझे क्षमा करे। मेरे हृदय खोल रहा हूँ। मेरे हृदय में आइए। मुझे भी आपके बच्चा बनालो। अनंत मृत्यु से बचाकर यीशु मसीह मे अनंत जीवन प्रदान कीजिए। आप मेरे प्रार्थना स्वीकार करने के लिए धन्यवाद देता हूँ। अपने आप को आत्मा समर्पित करता हूँ कि आप मेरे हाथ न छोड के हर दिन चलाइए। हमारे प्यारे प्रभु आपके प्रिय पुत्र मसीह के पवित्र नाम से प्रार्थना करता हूँ । आमीन (आमीन का अर्थ - वैसा ही हो)

साधु सुन्दर सिंह

भारत के पंजाब राज्य के रामपूर जिले में सुन्दर सिंह का जन्म शेर सिंह के घर में हुआ था। उनकी माता धार्मिक प्रवृत्ति की कट्टर महिला थी। उनके ऊपर अमीट निशान छोड़ी थी। उनका पालन–पोषण सिख रीतिरीवाज के अनुसार किया गया। सुन्दर की माता ने उसको ईसाई मिशनरी स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने के लिए भेजी थी और यहीं पर सुन्दर बाइबल से परिचित हुए। जब सुन्दर 14 साल के हुए उनके आदरणीया माताजी का निधन हो गया। यह घटना सुन्दर के अन्दर गहरा सदमा और आत्मिक बेचैनी को पैदा किया। उसने बाइबल को फाड़कर जला दिया। ये सब कुछ करने के बावजूद भी उनको शान्ति नहीं मिली।

तब सुन्दर जानना चाहता था कि सच्चा परमेश्वर कौन हैं? वह अपने आपसे कहा कि अगर कोई सच्चा परमेश्वर उससे बात नहीं करेगा तो मैं अपने आपको पंजाब मेल (रेल गाडी) के नीचे गिरकर मर जाऊँगा। वह तीन दिन तक उपवास किया और उन सारे ईश्वरों का नाम लिया जो वह जानता था। लेकिन यीशु का नाम नहीं लिया, क्योंकि वो उनसे घृणा करता था। अचानक वहाँ एक ज्योति दिखाई दिया जिसमें यीशु क्रूस में लटक रहे थे और कह रहे थे सुन्दर क्यों तुम मुझे अन्य नामों से बुला रहे हो, वह तो मैं नहीं हूँ ? तुम्हारे पापों के लिए मारा गया था ? उसी वक्त सुन्दर को एहसास हुआ कि यीशु अब भी जीवित है और मरा नहीं हैं। तुरन्त वह घुटना में आ गए। उन्होंने ऐसी शान्ति महसूस की जिसे अपने जीवन में इससे पहले कभी महसूस नहीं की थी। वह दर्शन तो गायब हो गया पर वह शान्ति और आनन्द उनके अन्दर बस गई।

वह अपने आप को पूरी तरह से मसीह के लिए अर्पण कर लिया। वह पीले रंग का पोशाक पहनकर सेवाकाई के लिए निकल पड़े और, प्रेम, शान्ति और मसीह के द्वारा नया जन्म संदेश को फैलाते रहे। प्रेम का संदेश फैलाते हुए न केवल भारत और तिब्बत में बल्कि पूरे दुनिया में यात्रा किए।

अधिक जानकारी केलिए सम्पर्क करे–

8463937535
9989875871
9440486332

LOCAL CONTACT :

परमेश्वर प्रेम है